



INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

Volume 3; Issue 4; 2025; Page No. 393-398

Received: 17-04-2025

Accepted: 22-06-2025

Published: 26-07-2025

तक्षशिला और नालंदा विश्वविद्यालयों का तुलनात्मक अध्ययन

¹KM Roli Singh and ²Dr. Alka Mishra

¹Research Scholar, Mahakaushal University, Jabalpur, Madhya Pradesh, India

²Professor, Mahakaushal University, Jabalpur, Madhya Pradesh, India

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.20111383>

Corresponding Author: KM Roli Singh

सारांश

प्राचीन काल से ही शिक्षा मानव सभ्यता का अंग रही है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक भारत की शिक्षा प्रणाली में बहुत बड़े परिवर्तन हुए हैं। शिक्षा में नैतिक, सामाजिक, नैतिक मूल्यों के साथ-साथ कौशल और गुण भी सिखाए जाने चाहिए। शिक्षा को केवल आजीविका कमाने के साधन ही नहीं सिखाना चाहिए बल्कि व्यक्ति के चरित्र और व्यक्तित्व का निर्माण भी करना चाहिए। वर्तमान आधुनिक शिक्षा प्रणाली केवल साक्षरता दर को बढ़ा रही है लेकिन शिक्षित लोगों का विकास करने में असमर्थ है। यह शोधपत्र प्राचीन काल, मध्यकालीन युग और आज के आधुनिक युग की शिक्षा प्रणाली में अंतर का अध्ययन करता है। यह शोधपत्र वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अपनाए जा सकने वाले परिवर्तनों पर भी विचार करता है ताकि इसे और अधिक प्रभावी बनाया जा सके।

मूलशब्द: तक्षशिला, नालंदा, विश्वविद्यालय, शिक्षा, प्राचीन काल, आधुनिक काल, भारत, शिक्षा प्रणाली

प्रस्तावना

उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध और बीसवीं सदी की शुरुआत में स्वामी विवेकानंद, रामकृष्ण मिशन और थियोसोफिकल सोसायटी ऑफ इंडिया ने पश्चिमी दुनिया को भी ज्ञान की प्राचीन स्वर्ण खदान के आकर्षण और शालीनता से परिचित कराने की कोशिश की, जिसने न केवल भारतीयों, बल्कि विदेशियों को भी प्रेरित किया। विभिन्न देशों के बुद्धिजीवियों ने इसे अपनी भाषाओं में अनुवादित किया और तर्कसंगत दिमाग के लिए इसकी पुनर्व्याख्या की। जैसे-जैसे भारत प्राचीन से मध्यकालीन की ओर बढ़ा, इसकी शिक्षा प्रणाली खराब होती गई। दुनिया की इतनी कुशल और सबसे प्राचीन शिक्षा प्रणाली के पतन के लिए कई कारक जिम्मेदार थे। मध्यकालीन युग में क्षय और आक्रमणों के कारण निरंतर मंथन के साथ, ज्ञान के विकास के लिए एक स्थान के रूप में विश्वविद्यालय का विचार भुला दिया गया।

साहित्य समीक्षा

मिश्रा, नंदिता और अन्य। (2023) [1]। भारत में प्राचीन काल से ही शिक्षा और सीखने की समृद्ध परंपरा रही है और विशेष रूप से

पुनर्जागरण काल के दौरान, जो भारतीय संस्कृति का स्वर्ण युग है। इस अवधि के दौरान शिक्षा में तीन प्रमुख उपलब्धियाँ दशमलव प्रणाली, महान संस्कृत महाकाव्य और खगोल विज्ञान, गणित और धातु विज्ञान के विज्ञान में योगदान थीं। चार वेद, यानी ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद आदर्श, प्रथाओं और आचरण के माध्यम से विन्यस्त किए गए थे। क्रिया (कर्म) का सिद्धांत भारतीय शिक्षा प्रणाली में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखता है और प्राचीन से आधुनिक शिक्षा में संक्रमण के दौरान विकसित हुआ है। वैदिक काल में शिक्षण की दो विधियाँ प्रचलित थीं। पहली, मौखिक/मौखिक विधि और दूसरी सोच (चिंतन) पर आधारित। वर्तमान उच्च शिक्षा ने इसी तरह की रेखाओं के साथ बहु-विषयक दृष्टिकोणों के रुझान दिखाए हैं। NEP 2020 भी एक बहु-विषयक दृष्टिकोण का सुझाव देता है। ब्लूम का वर्गीकरण सीखने के तीन डोमेन, संज्ञानात्मक, भावात्मक और मनोप्रेरक को परिभाषित करता है। प्राचीन शिक्षा प्रणाली भी तीन डोमेन पर आधारित है, निम्न-स्तरीय संज्ञानात्मक कौशल का निर्माण करके उच्च-क्रम सीखने का विकास करना। दृष्टिकोण: भारत में शिक्षा प्रणाली पर

माध्यमिक प्रकाशित शोध लेखों पर आधारित खोजपूर्ण अध्ययन, आधुनिक बहु-विषयक शिक्षा में प्राचीन शिक्षा प्रणाली की प्रासंगिकता पर मौजूदा शैक्षणिक शोध की व्याख्या करना चाहता है। निष्कर्ष: साहित्य विश्लेषण इस बात पर जोर देता है कि वेदों पर आधारित प्राचीन शिक्षण प्रणालियों में कई योग अभ्यास शामिल थे। सामान्य तौर पर, मन को शांत करने और सीखने में सुधार करने के लिए, आसन, मंत्रों का जाप और ध्यान किया जाता था। यूजीसी और एआईसीटीई द्वारा निर्देशित एचईआई द्वारा समान प्रथाओं पर जोर दिया जाता है। सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास और योग में एकीकृत दृष्टिकोण के अभ्यास के लिए सार्वभौमिक मानव मूल्य (यूएचवी) को लागू किया गया है। स्मृति विकसित करने के आधुनिक तरीकों में तार्किक विधि, अंतराल सीखना और तर्कसंगत स्मृति शामिल हैं। ये सभी शिक्षण और सीखने के प्राचीन तरीके से प्राप्त हुए हैं। एबीसीडी लिस्टिंग पद्धति का उपयोग करते हुए यह पेपर शिक्षार्थियों के दृष्टिकोण और शिक्षकों के दृष्टिकोण से आधुनिक शिक्षा प्रणाली के फायदे, लाभ, बाधाओं और नुकसानों का पता लगाता है। पेपर का प्रकार: खोजपूर्ण शोध।

मिश्रा, नंदिता और अन्य। (2023) ^[1]। भारत में प्राचीन काल से ही शिक्षा और सीखने की समृद्ध परंपरा रही है और विशेष रूप से पुनर्जागरण काल के दौरान, जो भारतीय संस्कृति का स्वर्ण युग है। इस अवधि के दौरान शिक्षा में तीन प्रमुख उपलब्धियाँ दशमलव प्रणाली, महान संस्कृत महाकाव्य और खगोल विज्ञान, गणित और धातु विज्ञान के विज्ञान में योगदान थीं। चार वेद, यानी ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद आदर्शों, प्रथाओं और आचरण के माध्यम से विन्यस्त किए गए थे। क्रिया (कर्म) का सिद्धांत भारतीय शिक्षा प्रणाली में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखता है और प्राचीन से आधुनिक शिक्षा में संक्रमण के दौरान विकसित हुआ है। वैदिक काल में शिक्षण की दो विधियाँ प्रचलित थीं। पहली, मौखिक/मौखिक विधि और दूसरी सोच (चिंतन) पर आधारित। वर्तमान उच्च शिक्षा ने इसी तरह की रेखाओं के साथ बहु-विषयक दृष्टिकोणों के रुझान दिखाए हैं। NEP 2020 भी एक बहु-विषयक दृष्टिकोण का सुझाव देता है। ब्लूम का वर्गीकरण सीखने के तीन डोमेन, संज्ञानात्मक, भावात्मक और मनोप्रेरक को परिभाषित करता है। प्राचीन शिक्षा प्रणाली भी तीन डोमेन पर आधारित है, निम्न-स्तरीय संज्ञानात्मक कौशल का निर्माण करके उच्च-क्रम सीखने का विकास करना। दृष्टिकोण: भारत में शिक्षा प्रणाली पर माध्यमिक प्रकाशित शोध लेखों पर आधारित खोजपूर्ण अध्ययन, आधुनिक बहु-विषयक शिक्षा में प्राचीन शिक्षा प्रणाली की प्रासंगिकता पर मौजूदा शैक्षणिक शोध की व्याख्या करना चाहता है। निष्कर्ष: साहित्य विश्लेषण इस बात पर जोर देता है कि वेदों पर आधारित प्राचीन शिक्षण प्रणालियों में कई योग अभ्यास शामिल थे। सामान्य तौर पर, मन को शांत करने और सीखने में सुधार करने के लिए, आसन, मंत्रों का जाप और ध्यान किया जाता था। यूजीसी और एआईसीटीई द्वारा निर्देशित एचईआई द्वारा समान प्रथाओं पर जोर दिया जाता है। सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास और योग में एकीकृत दृष्टिकोण के अभ्यास के लिए सार्वभौमिक मानव मूल्य (यूएचवी) को लागू किया गया है। स्मृति विकसित करने के आधुनिक तरीकों में तार्किक विधि, अंतराल सीखना और तर्कसंगत स्मृति शामिल हैं। ये सभी शिक्षण और सीखने के प्राचीन तरीके से प्राप्त हुए हैं। एबीसीडी लिस्टिंग पद्धति का उपयोग करते हुए यह पेपर शिक्षार्थियों के दृष्टिकोण और शिक्षकों के दृष्टिकोण से आधुनिक शिक्षा प्रणाली के फायदे, लाभ, बाधाओं और नुकसानों का पता लगाता है। पेपर का प्रकार: खोजपूर्ण शोध।

कालोखे, अनिल. (2025) ^[2]. भारतीय शिक्षा प्रणाली ने प्राचीन काल के समग्र और मूल्य-संचालित दृष्टिकोणों से आधुनिक युग के संरचित और प्रौद्योगिकी-संचालित मॉडल में संक्रमण करते हुए एक गहन विकास देखा है। प्राचीन भारत, अपने गुरुकुल प्रणाली और नालंदा और तक्षशिला जैसे प्रतिष्ठित केंद्रों के साथ, व्यक्तिगत सलाह, अंतःविषय शिक्षा और नैतिक विकास को प्राथमिकता देता था। शिक्षा व्यावहारिक कौशल, आध्यात्मिक विकास और सामाजिक कल्याण में गहराई से निहित थी। औपनिवेशिक प्रभावों के आगमन के साथ, प्रणाली मानकीकृत पाठ्यक्रम, औपचारिक परीक्षाओं और संस्थागत रूपरेखाओं की ओर स्थानांतरित हो गई, जिसने आधुनिक शिक्षा का मार्ग प्रशस्त किया। यह पत्र भारतीय शिक्षा की यात्रा की खोज करता है, शिक्षण पद्धति, पहुँच और सामग्री में परिवर्तनों का विश्लेषण करता है। प्राचीन और समकालीन दोनों दृष्टिकोणों की शक्तियों को एकीकृत करके, भारत की शिक्षा प्रणाली में भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक संतुलित और समावेशी मॉडल बनाने की क्षमता है।

सी.वी., सिंधुजा एट अल. (2021) ^[3]. भारतीय शिक्षा प्रणाली धार्मिक प्रणालियों से बहुत प्रभावित है और कुछ के पास अपना स्वदेशी दृष्टिकोण है जो माध्यमिक और उच्च शिक्षा के लिए आधार के रूप में काम करता है। वर्तमान शोधपत्र यह समझने का प्रयास करता है कि इन संस्थानों ने प्राचीन, मध्यकालीन, औपनिवेशिक और स्वतंत्रता के बाद के कालखंडों के अवलोकन के माध्यम से माध्यमिक विद्यालय प्रणाली में शिक्षा के औपचारिककरण में कैसे भूमिका निभाई है। वर्तमान शोधपत्र का उद्देश्य माध्यमिक और उच्च शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में सामान्य सूत्र के साथ-साथ अंतरों को सामने लाना है और कैसे समय के साथ, शिक्षा के औपचारिककरण ने क्रमशः गुण और दोष के प्रति प्रतिक्रियाओं में परिवर्तन किए हैं। प्राचीन से लेकर स्वतंत्रता के बाद के कालखंडों तक इन धार्मिक प्रणालियों के संस्थागत अंतरों पर चर्चा की गई है। यह समय का महत्वपूर्ण बिंदु है क्योंकि दुनिया कोरोनावायरस के कारण होने वाली महामारी से लड़ने के लिए संघर्ष कर रही है। सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्रों में से एक शिक्षा है जो अचानक दुनिया भर में बंद होने के कारण निरंतरता खो गई है। भविष्य सभी शिक्षा बिरादरी के लिए अस्पष्ट, अकल्पनीय और चुनौतीपूर्ण दिखता है। भारतीय शिक्षा प्रणाली के लिए प्राचीन मूल्य इसकी विविधता, प्रासंगिकता, महत्व, अनुभव, इतिहास, सामग्री आदि के संदर्भ में शीर्ष स्थान प्राप्त करता है। यह उन गुणों से भरा है जो आधुनिक समय में दुनिया में कहीं भी किसी भी शिक्षा प्रणाली में नहीं पाए जाते हैं। इस महत्वपूर्ण मोड़ पर प्राचीनतम सभ्य भारतीय समाज द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किए गए अद्वितीय योगदान को फिर से तलाशने की आवश्यकता है। इस शोधपत्र का उद्देश्य ऑनलाइन उपलब्ध प्रासंगिक साहित्य के माध्यम से भारत में प्राचीन प्रथाओं का अध्ययन करके वर्तमान महामारी की स्थिति में उठाए गए नए सवालों के जवाब प्राप्त करना है। अध्ययन का केंद्र विज्ञान शिक्षा है, जो प्रयोग करके सीखने में असमर्थता के कारण वर्तमान में बहुत प्रभावित हुई है। प्राचीन भारतीय शिक्षा में विज्ञान शिक्षा को एक विशेष स्थान प्राप्त था, जिसे हाल के दिनों में अंधाधुंध आधुनिकीकरण के कारण कुछ हद तक भुला दिया गया है। इसका कारण पश्चिमी संस्कृति का अनुसरण करने की हमारी प्रवृत्ति भी है। भारत में शिक्षा के इतिहास से सुराग लेकर तैयार किए गए सुझाव और निष्कर्ष आगे की रूपरेखा देने के लिए निकाले गए हैं।

कुमार, अमित. (2020) ^[4]. यह समय का एक महत्वपूर्ण बिंदु है क्योंकि दुनिया कोरोनावायरस के कारण होने वाली महामारी से

लड़ने के लिए संघर्ष कर रही है। सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्रों में से एक शिक्षा है, जो अचानक दुनिया भर में बंद होने के कारण निरंतरता खो गई है। भविष्य सभी शिक्षा बिरादरी के लिए अस्पष्ट, अकल्पनीय और चुनौतीपूर्ण लग रहा है। भारतीय शिक्षा प्रणाली के लिए प्राचीन मूल्य इसकी विविधता, प्रासंगिकता, महत्व, अनुभव, इतिहास, सामग्री आदि के संदर्भ में शीर्ष स्थान प्राप्त करता है। यह उन गुणों से भरा है जो आधुनिक समय में दुनिया में कहीं भी किसी भी शिक्षा प्रणाली में नहीं पाए जाते हैं। सबसे पुराने सभ्य भारतीय समाज द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में अद्वितीय योगदान को इस महत्वपूर्ण मोड़ पर फिर से तलाशने की आवश्यकता है। इस पत्र का उद्देश्य ऑनलाइन उपलब्ध प्रासंगिक साहित्य के माध्यम से भारत में प्राचीन प्रथाओं का अध्ययन करके वर्तमान महामारी की स्थिति में उठाए गए नए सवालों के जवाब प्राप्त करना है। विज्ञान शिक्षा पर अध्ययन का ध्यान केंद्रित है जो वर्तमान में प्रयोगों द्वारा सीखने में असमर्थता के कारण बहुत अधिक प्रभावित हुआ है। विज्ञान शिक्षा को प्राचीन भारतीय शिक्षा में एक विशेष स्थान प्राप्त था जिसे हाल के दिनों में अंधे आधुनिकीकरण के कारण कुछ हद तक भुला दिया गया है। यह पश्चिमी संस्कृति का अनुसरण करने की हमारी प्रवृत्ति के कारण भी है। भारत में शिक्षा के इतिहास से संकेत लेकर सुझाव तैयार किए गए हैं और निष्कर्ष आगे की रूपरेखा देने के लिए निकाले गए हैं।

तक्षशिला

इतिहास: तक्षशिला प्राचीन भारत के विश्वविद्यालयों में सबसे पुराना है। यह 700 ईसा पूर्व से ही शिक्षा के केंद्र के रूप में प्रसिद्ध था। इस स्थान पर शैक्षणिक गतिविधियाँ कम से कम कुछ शताब्दियों पहले शुरू हुई होंगी। इस स्थान का नाम भरत के पुत्र तक्ष के नाम पर पड़ा। रामायण में वर्णन है कि कैसे भरत ने गंधर्वों को हराने के बाद दो प्रसिद्ध शहरों की स्थापना की- तक्ष के लिए गंधर्व देश में तक्षशिला और दूसरे बेटे पुष्कल के लिए गांधार में पुष्कलावत। यह वह स्थान भी है जहाँ राजा जनमेजय ने अपने पिता तारिक्षित की मृत्यु का बदला लेने के लिए अपना प्रसिद्ध सर्प यज्ञ* किया था। बहुत हाल तक इस स्थान का ठीक-ठीक पता लगाना संभव नहीं था। प्लिनी ने बताया है कि यह स्थान सिंधु नदी के पूर्व में लगभग पचपन मील की दूरी पर स्थित था। कनिंघम द्वारा खोजे गए असंख्य स्तूपों, विहारों और मंदिरों की मदद से अब शहर की स्थिति का ठीक-ठीक पता लगा लिया गया है। पुरातात्विक खोजों से पता चलता है कि शहर छह वर्ग मील के क्षेत्र में फैला हुआ था। इस स्थल से तक्षशिला के नाम वाला एक ताम्र-पत्र शिलालेख भी मिला है। यह स्थान रावलपिंडी से बीस मील पश्चिम में, शांडेरा के पास, कलकसराय से एक मील दक्षिण-पूर्व की दूरी पर स्थित है।

प्रशासन: तक्षशिला उच्च शिक्षा के एक प्रसिद्ध केंद्र के रूप में जाना जाने लगा क्योंकि यहाँ कई विद्वान शिक्षक रहते थे जिन्हें विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ के रूप में मान्यता प्राप्त थी। यह उनकी उत्कृष्टता के कारण ही था कि वे उपमहाद्वीप के दूर-दराज के इलाकों से सैकड़ों छात्रों को आकर्षित कर सकते थे, भले ही उन्हें लंबी और खतरनाक यात्रा करनी पड़ती थी। शिक्षकों द्वारा किए जाने वाले कामों के समन्वय के लिए कोई रास्ता नहीं था और न ही राजा या स्थानीय नेताओं जैसा कोई बाहरी अधिकारी उनकी गतिविधियों को निर्देशित करता था। प्रत्येक शिक्षक अपने आप में एक संस्था था और उसे अपने काम में पूरी स्वायत्तता प्राप्त थी। पाठ्यक्रम की अवधि तय करने, अध्ययन के पाठ्यक्रमों को

निर्देशित करने, छात्रों को चुनने या अस्वीकार करने और दिन-प्रतिदिन के कामों को निर्देशित करने के लिए नियम बनाने में उसका अधिकार अंतिम था।

केवल उच्च शिक्षा प्रदान की गई

जैसा कि पहले बताया गया है, ये संस्थान केवल उच्च पाठ्यक्रम पढ़ाते थे। इसलिए ये संस्थान छात्रों को कुछ विशेष विषयों के ज्ञान के अंत तक ले जाते थे, इसे माध्यमिक स्तर से शुरू करते थे, जिसे छात्र इन संस्थानों में शामिल होने से पहले कहीं और पूरा कर चुके होते थे। शिक्षा की प्रक्रिया, जो प्राथमिक शिक्षा के साथ घर पर शुरू हुई और आराम में शिक्षा के रूप में विस्तारित हुई, जो माध्यमिक शिक्षा के अनुरूप थी, इन स्थानों पर अपनी परिणति पर पहुँची, जहाँ विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षा प्रदान की गई। प्राचीन भारत में प्रचलित प्रणाली के अनुसार, प्राथमिक शिक्षा आठ वर्ष की आयु तक के बच्चों को दी जाती थी, और माध्यमिक शिक्षा में आठ से बारह वर्ष और शामिल होते थे। इसलिए, प्राचीन भारतीय विश्वविद्यालयों में सीखने के लिए आने वाले छात्र लगभग सोलह से बीस वर्ष की आयु के होते थे। तक्षशिला अपने शिक्षकों के लिए इतना प्रसिद्ध था कि सैकड़ों छात्र अपने घर की सुख-सुविधाओं और सुरक्षा को छोड़कर ज्ञान की तलाश में यहाँ जाते थे। उन्हें इस स्थान पर भेजने में उनके माता-पिता का त्याग वास्तव में बहुत बड़ा था, खासकर जब कोई उन दिनों में लंबी यात्राओं में शामिल जोखिम पर विचार करता है जब यात्रा धीमी, खतरनाक और अनिश्चित थी। अनेक संदर्भों से पता चलता है कि बनारस, राजगृह, मिथिला, उज्जैन, कोयल, मध्यदेश और उत्तर में कुरु साम्राज्य जैसे दूर-दराज के स्थानों से सैकड़ों की संख्या में छात्र इस शहर में आते थे। इस प्रकार तक्षशिला भारत की बौद्धिक राजधानी थी, एक केंद्रीय विश्वविद्यालय जो भारत में साहित्य की दुनिया पर आधिपत्य रखता था। देश के विभिन्न भागों में शिक्षा के अन्य सभी केंद्र इससे संबद्ध थे।

पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रम

तक्षशिला में साहित्यिक और वैज्ञानिक या तकनीकी विषयों में कई तरह के पाठ्यक्रम चलाए जाते थे। इन दो तरह के पाठ्यक्रमों को दर्शाने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले शब्द वेद और शिल्प थे। इस विश्वविद्यालय में पढ़ाए जाने वाले वेदों की संख्या तीन बताई गई है, लेकिन यह समझाना मुश्किल है कि चौथे वेद, संभवतः अथर्ववेद को सूची से क्यों हटा दिया गया। ऐसा शायद इसलिए हुआ क्योंकि अथर्ववेद की विषय-वस्तु कमोबेश धर्मनिरपेक्ष प्रकृति की थी और उसमें वर्णित विषय अध्ययन की विभिन्न अन्य शाखाओं में भी शामिल थे। वास्तव में, अथर्ववेद को हटाना असंभव है, क्योंकि मनु स्मृति के अनुसार धार्मिक मामलों के मंत्री-पुरोहित-को अथर्ववेद का विशेषज्ञ होना चाहिए था। वेदों के अध्ययन का मतलब संभवतः उन्हें कंठस्थ करना था, क्योंकि हिंदू संस्कृति के संरक्षण और प्रसार के लिए ब्राह्मणों द्वारा की गई यह सबसे महत्वपूर्ण सेवा थी। यह बहुत संभव है कि वेदों के अध्ययन में इन पवित्र पुस्तकों की विषय-वस्तु की व्याख्या और व्याख्या भी शामिल थी। इस समय तक वेद की विषय-वस्तु को समझने में सहायता के लिए अनेक पुस्तकें लिखी जा चुकी थीं, तथा वैदिक व्युत्पत्ति पर एक ग्रंथ निरुक्त के लेखक ने कहा है कि जो व्यक्ति केवल वेद का उच्चारण जानता था, लेकिन उसका अर्थ नहीं जानता था, वह केवल बोझ ढोने वाले स्तंभ के समान था, तथा जो अर्थ जानता था, उसे ही सारी समृद्धि प्राप्त होती थी। संभवतः "वेद" शब्द में इसके छह सहायक विज्ञानों का अध्ययन भी शामिल

था: सही उच्चारण का विज्ञान, विभिन्न अनुष्ठानों और बलिदानों के प्रदर्शन का मार्गदर्शन करने वाला सूत्र साहित्य, व्याकरण, खगोल विज्ञान, छंदशास्त्र और व्युत्पत्ति विज्ञान। इन सहायक विज्ञानों का अध्ययन वेदों के अर्थ को समझने से पहले होना चाहिए था।

वित्त

समाज द्वारा शिक्षकों को सभी आवश्यक वित्तीय सहायता प्रदान की जाती थी, जो सामान्य नियम के रूप में सभी छात्रों को मुफ्त भोजन और आवास प्रदान करते थे। किसी भी छात्र को अनिवार्य आधार पर कोई शुल्क देने की आवश्यकता नहीं थी। शुल्क न देने पर कभी भी संस्थान से निष्कासन नहीं हुआ और न ही किसी तरह का भेदभावपूर्ण व्यवहार हुआ। वास्तव में, शुल्क का भुगतान करने की शर्त की कड़ी निंदा की गई थी। ज्ञान को पैसे के लिए विनिमय करने के लिए बहुत पवित्र माना जाता था और हिंदू शास्त्रों में छात्रों से पैसे लेने वालों के खिलाफ विशेष निषेधाज्ञाएँ हैं। मनु के शास्त्र के अनुसार, एक वेतनभोगी शिक्षक, यानी एक शिक्षक जो अनिवार्य आधार पर शुल्क लेता है, उसे मेज पर संगति के लिए अयोग्य माना जाता है। हालाँकि, उच्च शिक्षा के लिए संस्थानों के सुचारू संचालन को प्रभावित करने वाली कोई वित्तीय कठिनाई नहीं थी

नालंदा

इतिहास: ईसाई युग से बहुत पहले, यह स्थान एक धार्मिक केंद्र के रूप में विख्यात था। यह वो स्थान था जो बुद्ध और उनके शिष्यों के ठहरने से पवित्र हुआ था (523 ईसा पूर्व-477 ईसा पूर्व) और बौद्ध सिद्धांतों पर कई चर्चाओं का गवाह बना था। यह वह स्थान भी था जहाँ जैन तीर्थंकर महावीर ने गोशाल से मुलाकात की थी। यह ईसाई युग की प्रारंभिक शताब्दियों में नागार्जुन और अन्य लोगों द्वारा की गई चर्चाओं का स्थान था। अशोक ने इस स्थान पर एक मंदिर और एक विहार बनवाया था क्योंकि यह घनी आबादी वाले राजगढ़ से थोड़ी ही दूरी पर था और इसलिए धार्मिक प्रथाओं के लिए सुविधाजनक था। विश्वविद्यालय की स्थापना शक्रदित्य ने की थी और उनके बेटे बुद्ध गुप्त राजा और उनके उत्तराधिकारी तथागत गुप्त राजा ने इसका विस्तार किया था। इसके बाद 500 ईस्वी में नरसिंहगुप्त का पीछा करने के दौरान मिहिरकुल द्वारा इस स्थान को नष्ट कर दिया गया था इस प्रकार, हालांकि यह स्थान दूसरी शताब्दी ईस्वी में नागार्जुन के दिनों में और उससे भी पहले बुद्ध के दिनों में एक महान धार्मिक और शैक्षिक केंद्र था, लेकिन यह केवल पांचवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में ही विश्वविद्यालय बन पाया जब इस स्थान की ओर शैक्षिक तीर्थयात्राओं का प्रवाह शुरू हुआ। अपने पूरे अस्तित्व के दौरान, इस विश्वविद्यालय को शाही संरक्षण का दुर्लभ विशेषाधिकार प्राप्त था।

नालंदा की इमारतें

पहला संघाराम शक्रादित्य (415-455 ई.) ने बनवाया था। उनके बेटे बुद्ध गुप्त राजा ने दक्षिण में एक और संघाराम बनवाया। उनके उत्तराधिकारी तथागत गुप्त राजा ने इसके पूर्व में एक और बनवाया। बालादित्य (468-472 ई.) ने उत्तर-पूर्व में एक और बनवाया। उन्होंने तीन सौ फीट ऊंचा एक और महान विहार भी बनवाया, जिसे 'इस तरह बनाया गया था मानो कैलास पर्वत को पार करने के उद्देश्य से बनाया गया हो।' उनके बेटे वज्र ने पश्चिम में एक और संघाराम बनवाया। बाद में मध्य भारत के एक राजा श्रीहर्ष ने इसके उत्तर में एक और संघाराम बनवाया और साथ ही इन इमारतों के चारों ओर एक ऊंची दीवार बनवाई जिसमें एक

द्वार था। ग्यारहवीं शताब्दी तक हिंदू और बौद्ध दानदाताओं द्वारा नई इमारतों का निर्माण जारी रहा। ह्वेन त्सियांग ने अपने समय में नालंदा प्रतिष्ठान के छह मठों का उल्लेख किया है। ये सभी इमारतें अपने आकार और ऊँचाई में राजसी थीं, जिनमें समृद्ध रूप से सजे हुए टॉवर, नुकीली पहाड़ी की तरह दिखने वाले परी जैसे बुर्ज और सुबह की धुंध में खोई हुई वेधशालाएँ थीं। ऊपरी कमरे बादलों से ऊपर थे, और उनकी खिड़कियों से हवाएँ और बादल हमेशा नए रूप बनाते हुए देखे जा सकते थे, और ऊँचे छज्जों से सूर्यास्त की भव्यता और चाँदनी की महिमा दिखाई देती थी। सभी बाहरी प्रांगण जिसमें पुजारियों के कक्ष थे, चार चरणों वाले थे। चरणों में ड्रैगन के उभार और रंगीन छज्जे, मोती-लाल खंभे, नक्काशीदार और अलंकृत, समृद्ध रूप से सजे हुए कटघरे थे, जबकि छतें टाइलों से ढकी हुई थीं जो हज़ारों रंगों में प्रकाश को प्रतिबिंबित करती थीं। "मैदान गहरे पारदर्शी तालाबों से सुशोभित थे, जिनमें गहरे लाल रंग के कनक फूलों के साथ नीले कमल थे। यह जगह आम के बागों से छाई हुई थी।

प्रवेश

नालंदा, अपने प्रकार के अन्य विश्वविद्यालयों की तरह, एक ऐसा संस्थान था जो केवल उच्च शिक्षा प्रदान करता था, और तदनुसार, प्रवेश केवल उन लोगों तक सीमित था जिनके पास स्नातकोत्तर अध्ययन करने के लिए आवश्यक पृष्ठभूमि थी। विशेष रूप से, संस्थान एक ऐसे स्थान के रूप में जाना जाता था जहाँ देश के सभी हिस्सों के साथ-साथ पड़ोसी देशों के विद्वान लोग अपनी शंकाओं का समाधान करने और वाद-विवाद की कला में निपुणता प्राप्त करने के लिए एकत्रित होते थे। ऐसे विद्वान मोरीगोटिया, चीन, कोरिया, तिब्बत और तोखारा से बड़ी संख्या में आते थे। हालाँकि विद्वानों का सोफी बौद्ध धर्म की पांडुलिपियाँ हासिल करने के लिए आया था, लेकिन कई ऐसे भी थे जो विश्वविद्यालय के अधिकारियों से अपने सिद्धांतों की स्वीकृति की मुहर लगवाने के लिए आए थे। यही कारण था कि जो लोग विश्वविद्यालय में प्रवेश पाना चाहते थे, उन्हें बहुत कड़ी परीक्षा से गुजरना पड़ता था। ह्वेन त्सफईंग ने बताया है कि प्रवेश पाने के लिए आने वाले लोगों में से केवल बीस प्रतिशत ही परीक्षा में सफल हुए और बाकी को निराश होकर वापस लौटना पड़ा। प्रवेश चाहने वाले उम्मीदवारों की जाँच करने वाले लोग धार्मिक विवादों के विशेषज्ञ थे और प्रवेश के लिए उम्मीदवारों की योग्यता को परखने के लिए हमेशा कठिन समस्याओं के साथ तैयार रहते थे। इसलिए, प्रवेश की संभावित आयु बीस वर्ष से कम नहीं रही होगी। यह भी उल्लेख किया गया है कि विश्वविद्यालय में माध्यमिक और प्राथमिक शिक्षा के लिए एक विभाग था जहाँ युवा विद्यार्थियों को स्वतंत्र रूप से प्रवेश दिया जाता था। इन सभी छात्रों के लिए, नैतिकता का एक बहुत ही उच्च मानक निर्धारित किया गया था, और नालंदा के छात्रों को नैतिकता के आदर्श के रूप में लिया जाता था, और सात शताब्दियों के लंबे अस्तित्व के दौरान, दोषी विद्रोह का एक भी मामला सामने नहीं आया है।

छात्रों के लिए भोजन एवं आवास की व्यवस्था

सभी बौद्ध संस्थाओं में भोजन और आवास निःशुल्क उपलब्ध थे, सिवाय उन संस्थाओं के जो आम लोगों को शिक्षा देने के लिए थीं। चूँकि हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म में बहुत कुछ समान है, इसलिए यह स्वाभाविक है कि इस मामले में भी हिंदू संस्थाओं जैसी ही स्थिति रही होगी। कुछ स्थानों पर यह बताया गया है कि 'शिक्षक चूँकि कोई फीस नहीं लेता था, इसलिए वह विद्यार्थी से अपने आश्रम या

विहार में काम करवाता था। यह बात केवल बौद्ध शिक्षकों पर ही लागू होनी चाहिए और वह भी बौद्ध धर्म के आरंभिक दिनों में जब दान की अधिकता नहीं थी। बाद के दिनों में शायद फीस पर जोर नहीं दिया जाता था; न ही उन विद्यार्थियों को कोई विशेष सुविधा दी जाती थी जो धनी थे और फीस देते थे। बौद्ध शिक्षा के इतिहास में ऐसे भी दौर थे जब विहारों या मठों में हर सुविधा उपलब्ध थी क्योंकि उनके पास बहुत अधिक धन था और अनिवार्य आधार पर फीस लेने की बात करना असंभव है। बौद्ध विद्यार्थियों को भिक्षा माँगने के लिए जाना पड़ता था, इसका अर्थ यह नहीं है कि वे संस्थाएँ गरीब थीं जहाँ उन्होंने शिक्षा प्राप्त की थी। संस्थाएँ धन और सामग्री से समृद्ध थीं। इसलिए, इसके पीछे कोई और कारण अवश्य रहा होगा।

वैश्विक शिक्षा में नालंदा और तक्षशिला का योगदान

नालंदा और तक्षशिला का वैश्विक शिक्षा में योगदान बहुत गहरा है, जो भारतीय उपमहाद्वीप की भौगोलिक सीमाओं से परे तक फैला हुआ है। ये प्राचीन संस्थान न केवल क्षेत्रीय महत्व के केंद्र थे, बल्कि वैश्विक विद्वत्ता की दिशा तय करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे।

अपनी बौद्धिक श्रेष्ठता के लिए प्रसिद्ध नालंदा विश्वविद्यालय ने अपने कठोर शैक्षणिक पाठ्यक्रम और संस्कृतियों में ज्ञान के प्रसार के माध्यम से वैश्विक शिक्षा में उल्लेखनीय योगदान दिया है। बौद्ध अध्ययन के केंद्र के रूप में इसकी भूमिका के माध्यम से वैश्विक शिक्षा पर विश्वविद्यालय के प्रभाव को समझा जा सकता है। चीन, कोरिया, जापान, तिब्बत और मध्य एशिया सहित दूर-दराज के देशों के विद्वान बौद्ध दर्शन और अन्य विषयों के अध्ययन में शामिल होने के लिए नालंदा आए (सेनगुप्ता, 2012)। नालंदा का प्रभाव एशिया से कहीं आगे तक फैला हुआ था, विश्वविद्यालय ज्ञान की तलाश करने वालों के लिए एक प्रकाशस्तंभ के रूप में कार्य करता था। इसके अतिरिक्त, नालंदा के समृद्ध पाठ्यक्रम, जिसमें तर्क, खगोल विज्ञान, चिकित्सा और दर्शन जैसे विषय शामिल थे, ने वैश्विक शैक्षिक प्रथाओं के विविधीकरण और संवर्धन में योगदान दिया। विश्वविद्यालय की दीवारों के भीतर विचारों के आदान-प्रदान ने ज्ञान के क्रॉस-सांस्कृतिक परागण को सुविधाजनक बनाया, जिसने वैश्विक स्तर पर बौद्धिक परिदृश्य को आकार दिया। व्यापक शिक्षा पर नालंदा के जोर ने शिक्षा के विकास पर एक अमिट छाप छोड़ी, जिसने दुनिया भर में शैक्षणिक तरीकों और पाठ्यक्रम की संरचना को प्रभावित किया।

दुनिया भर में पाठ्यक्रम की संरचना। तक्षशिला विश्वविद्यालय, जिसकी जड़ें 6वीं शताब्दी ईसा पूर्व में हैं, ने भी वैश्विक शिक्षा में महत्वपूर्ण योगदान दिया। प्राचीन व्यापार मार्गों के चौराहे पर स्थित तक्षशिला की महानगरीय प्रकृति ने विविध संस्कृतियों और बौद्धिक परंपराओं के अभिसरण को सुगम बनाया। फारस और ग्रीस जैसे दूर-दराज के क्षेत्रों से छात्र और विद्वान तक्षशिला में ज्ञान प्राप्त करने के लिए आते थे, जिससे यह विचारों का एक संगम बन गया। तक्षशिला के शैक्षिक लोकाचार का प्रभाव मेगस्थनीज जैसे प्राचीन यूनानी इतिहासकारों के कार्यों में प्रतिध्वनित हुआ, जिन्होंने शहर के समृद्ध बौद्धिक वातावरण का वृत्तांत लिखा (रंगराजन, 1992)। इसके अलावा, तक्षशिला के व्यापक पाठ्यक्रम, जिसमें राजनीति विज्ञान, गणित और कला जैसे क्षेत्र शामिल हैं, ने वैश्विक शैक्षिक प्रथाओं को समृद्ध बनाने में योगदान दिया। विभिन्न विषयों को मिलाकर एक अच्छी तरह से गोल शिक्षा पर विश्वविद्यालय का जोर, दुनिया भर के बाद के शैक्षणिक संस्थानों के लिए एक मॉडल के

रूप में कार्य करता है।

नालंदा और तक्षशिला दोनों विश्वविद्यालयों ने अपनी बौद्धिक जीवंतता और अध्ययन के विविध क्षेत्रों के प्रति प्रतिबद्धता के माध्यम से वैश्विक स्तर पर ज्ञान के आदान-प्रदान में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन संस्थानों का प्रभाव उनके लौकिक अस्तित्व से परे फैला, जिसने बाद की शताब्दियों को प्रभावित किया और वैश्विक शिक्षा की नींव पर एक स्थायी छाप छोड़ी। वैश्विक शिक्षा में नालंदा और तक्षशिला का योगदान बहुआयामी है, जिसमें ज्ञान का प्रसार, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और शैक्षणिक प्रथाओं को आकार देना शामिल है। ये प्राचीन विश्वविद्यालय, अपनी समृद्ध बौद्धिक परंपराओं के साथ, समय और भौगोलिक बाधाओं को पार करते हुए, ज्ञान के प्रकाश स्तंभ के रूप में गूंजते रहते हैं।

निष्कर्ष

बौद्ध शिक्षा ने उच्च संस्कृति की आधारशिला रखी। यद्यपि जीवन के प्रति भारतीयों का दृष्टिकोण हमेशा से ही धर्मपरायणता और पवित्रता से जुड़ा रहा है, फिर भी बौद्ध शिक्षा ने इसे और भी अधिक तीव्र और उन्नत किया। विदेशी छात्रों ने भारतीय धर्म, साहित्य और शिक्षा प्रणाली का बहुत गहन अध्ययन किया और अपनी भूमि में भारतीय संस्कृति के बीज फैलाए। बौद्ध संस्थानों के पवित्र द्वार सभी के लिए खुले थे जहाँ बिना किसी भेदभाव के सभी छात्रों को उनकी क्षमता और योग्यता के अनुसार उनके चरित्र के विकास के लिए समान अवसर प्रदान किए जाते थे। नालंदा और तक्षशिला, हालांकि भूगोल और कालक्रम से अलग हैं, लेकिन वैश्विक शिक्षा के पाठ्यक्रम को आकार देने में एक समान सूत्र साझा करते हैं। उनके पवित्र हॉल ऐसे केंद्र थे जहाँ विविध संस्कृतियाँ, दर्शन और अनुशासन एक साथ आए, जिससे एक बौद्धिक जीवंतता को बढ़ावा मिला जो क्षेत्रीय सीमाओं को पार कर गई। इन संस्थानों द्वारा सुगम बनाया गया बौद्धिक आदान-प्रदान एक ऐसा प्रकाश स्तंभ बन गया जिसने महाद्वीपों के पार ज्ञान के मार्ग को रोशन किया

संदर्भ

1. मिश्रा, नंदिता और ऐथल, श्रीरामन। प्राचीन भारतीय शिक्षा: आधुनिक शिक्षा प्रणाली में इसकी प्रासंगिकता और महत्व। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ केस स्टडीज इन बिजनेस, आईटी, एंड एजुकेशन।, 2023, 238-249। 10.47992/IJCSBE.2581.6942.02711
2. कालोखे अनिल। भारतीय शिक्षा प्रणाली का व्यापक विकास और प्रभाव: प्राचीन ज्ञान से आधुनिक नवाचार तक। जर्नल ऑफ़ नॉनलाइनियर एनालिसिस एंड ऑप्टिमाइजेशन। 2025;16:144-151. 10.36893/JNAO. 2025.V16I1.020.
3. सी. वी., सिंधुजा और अशोक, होनेदेवस्थान। भारत में शिक्षा: एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य। 2021;10:47-64.
4. कुमार अमित. कोविड-19 महामारी के बीच विज्ञान शिक्षा में सुधार के लिए सुराग पाने के लिए प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली का अध्ययन, 2020. 10.6084/m9.figshare.12912386.v1.
5. नम्बूदरीपाद, निमल और थॉमस, अनिता। प्राचीन भारत के संदर्भ में शैक्षिक वास्तुकला का निर्माण. 2024;23:241-252. 10.37326/bthnlv22.8/1411.
6. आर डॉ. भारत के प्राचीन विश्वविद्यालय: ज्ञान और शिक्षा के केंद्र। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ हिस्ट्री एंड आर्कियोलॉजी

- रिसर्च स्टडीज (आईजेएचएआरएस)।, 2024, 25-30. 10.63090/आईजेएचएआरएस/3049.1622.0004।
7. कंबाला, यामिनी, माथे रामकृष्ण। भारतीय शिक्षा प्रणाली का पतन: मुस्लिम और औपनिवेशिक शासन का ऐतिहासिक विश्लेषण। जर्नल ऑफ इंटीग्रल साइंसेज। 2023, 10. 10.37022/jis. v6i3.94।
 8. चंद्रा महेश, तिवारी गौरी, मुखर्जी एडवोकेट, मुखर्जी अभिनव, दुबे, अर्पिता, चंद्रात्रेय पीएचडी अभिजीत। प्राचीन ज्ञान और आधुनिक शिक्षा के बीच सेतु: उच्च शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ। 2024, 10.5281/ZENODO.14265330।
 9. जैन वीनस. अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन विनिमय: भारतीय इतिहास की झलकियाँ. 2016;1:78-81.

Creative Commons (CC) License

This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.